About (future) Programs of Vidya Ashram

Written for discussion in *Lokavidya* Group

-Chitra Sahasrabudhey

This is a summary of the thought and practice of the *lokavidya* movement for over 25 years now and some projections.

1. Important points of our understanding:

- Feeling (sympathy) for others' pain is a necessary constituent of knowledge.
- Humanity takes shape when values of truth, justice, sacrifice, living together and brotherhood are respected.
- Autonomous person, autonomous samaj, living together, distributed governance and equal respect to all streams of knowledge together constitute the basis of a just and creative society.
- Individual behaviour, social initiative and social organization are ideally guided by (and in) the light of saintly tradition.

2. Ideas for Social Initiative:

- Building forms of organization of life in tandem with rhythm of Nature is the knowledge-path.
- In agriculture, artisanry and art lies the basis of humanity, culture, and civilized life.
- Socialization of knowledge and systems constitutes the beginning of living together.
- 'Regular and equal incomes for all' takes us towards social justice and equal respect for all knowledge streams.
- Keeping production, storage, and exchange small and distributed provides a firm basis for *lokaniiti* and a just reconstruction of society. (Small and distributed applies to all speed, amount, size, number, distance, geographical area, temperature, currency, capital, unit of production and governance etc., also being standardised against the criteria of people's interests). *Lokniiti* applies to human life in its entirety which includes social, economic, political, cultural and many other specifiable aspects.
- People's movements constitute the window through which one may understand the meaning of actual conditions and the nature of political power.

3. Approaches to Social Dialogue:

- Participation in the movements of *Lokavidya-samaj*.
- *Lokavidya Satsang*

- *Darshan Akhada*
- *Kisan Karigar Panchayat*
- Social media (Website, Blogs e-mail, Facebook, WhatsApp, U-Tube etc.)

4. Constructive Campaigns:

- Local Industry and Local Market
- *Lokavidya Bhaichara* Media Schools
- Local Administration: *Ward Gyan Panchayat*
- Dignity for people's health-care ways.
- The art-path of social re-construction.

5. Methods and means for the Campaign:

- *Bauddhik Satyagrah*
- *Gyan Panchayat*
- *Lokavidya Satsang*
- Publication and social media

Ordinary people and the samaj must obtain and realize its strength through a broad dialogue on the idea of distributed governance to be able to stand up against the anti-human nature of governance today. The *lokavidya* discourse built by now gives us sufficient basis to do so. Such an imperative also follows in the wake of the national and international situations.

I suggest we develop a two-year program broadly in the direction described above. Different initiatives can constitute our activities at different places where persons of the *lokavidya* groups are present.

●

विद्या आश्रम के भविष्य के कार्यक्रमों के बारे में
मेरे सुझाव

--चित्रा सहस्रबुद्धे
14 फरवरी 2023

पिछले लगभग 25 वर्षों के लोकविद्या आन्दोलन के विचार और दर्शन की सहायता से बनी समझ और कार्य को नीचे लिखे बिन्दुओं से व्यक्त कर रही हूँ.

1. समझ के प्रमुख बिंदु :

- पर-पीड़ा की अनुभूति ज्ञान का अनिवार्य अंग है.
- सत्य, न्याय, त्याग, सहजीवन, भाईचारा के जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा से ही मनुष्यता आकार लेती है.
- स्वायत्त व्यक्ति, स्वायत्त समाज, सहजीवन, वितरित सत्ता और विविध ज्ञान-धाराओं को बराबर की प्रतिष्ठा, मिलकर न्यायपूर्ण और सृजनशील समाज की बुनियाद बनाते हैं.
- संत परंपरा से प्राप्त प्रकाश व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक पहल और समाज संगठन के आदर्श मार्ग उजागर करता है.

2. सामाजिक पहल के लिए वैचारिक मुद्दे :

- प्रकृति की लय में जीवन-संगठन के प्रकारों को गढ़ना ज्ञान-मार्ग है.
- खेती, कारीगरी और कलाकारी में मनुष्यता, संस्कृति और सभ्यता के बुनियादी आधार हैं.
- ज्ञान और व्यवस्थाओं के सामाजिकरण के लिए कदम उठाना सहजीवन के प्रारंभिक कदम हैं.
- 'सबकी पक्की, बराबर और नियमित आय हो' यह ज्ञान-धाराओं के बीच बराबरी और भाईचारा लाने और सामाजिक न्याय की दिशा में बढ़ने के पहले कदम हैं.
- 'छोटे पैमाने' पर उत्पादन, संग्रह और विनिमय (*गति, मात्रा, आकार, संख्या, दूरी, क्षेत्र, ताप, मुद्रा, पूँजी, संगठन और सञ्चालन की इकाइयाँ आदि का लोकहितकारी पैमाना*) यह न्यायपूर्ण समाज के निर्माण और लोकनीति (आर्थिक, सामाजिक और सत्तागत) के ठोस आधार हैं.
- आज की परिस्थितियों के मायने और सत्ता के चरित्र की समझ को हासिल करने का मार्ग आज के जन-आन्दोलनों के सन्दर्भों में देखा जाना चाहिए.

3. सामाजिक संवाद के तरीके/मार्ग :

- बृहत् लोकविद्या-समाज के आन्दोलनों में भागीदारी
- लोकविद्या सत्संग
- दर्शन अखाड़ा
- सोशल मिडिया फेसबुक, व्हाट्सएप समूह पर वार्ता
- किसान कारीगर पंचायत

4. रचनात्मक अभियान :

- स्थानीय उद्योग और स्थानीय बाज़ार
- लोकविद्या भाईचारा मीडिया विद्यालय

- स्थानीय प्रशासन : वार्ड ज्ञान पंचायत
- लोक चिकित्सा प्रणालियों की प्रतिष्ठा
- समाज सृजन के कला-मार्ग

5. अभियानों के लिए मार्ग/तरीकें :

- बौद्धिक सत्याग्रह
- ज्ञान पंचायतें
- लोकविद्या सत्संग
- प्रकाशन

6. मेरा सुझाव :

आज की राजनीतिक सत्ताओं के अमानवीय चरित्र से मोर्चा लेने का तरीका सामान्य लोगों और समाजों की अपनी शक्ति को हासिल करने के ज़रिये होना है और इसे हासिल करने के लिए **वितरित सत्ता के विचारों पर विमर्श आवश्यक लगता है.** अब तक लोकविद्या समूह द्वारा किये गए कार्य हमें इस विषय पर संवाद करने के पर्याप्त आधार देते हैं. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थितियां भी हमें इस दिशा में पहल लेने की आवश्यकता को दर्शाती हैं.

मेरा सुझाव है कि लोकविद्या आन्दोलन को इस दिशा में कम से कम अगले दो वर्ष का एक कार्यक्रम बनाना चाहिए. कम से कम 12-15 विषय क्षेत्र चुन कर उन पर ज़ूम के मार्फ़त वार्ताओं की श्रृंखला चलाई जानी चाहिए जो साल भर चले. समूह के लोग जहाँ-जहाँ हैं उन स्थानों से तैयारी के साथ लोगों को इस संवाद/विमर्श में शामिल करना चाहिए.

●